

# सम्पादकीय

## स्वच्छता के साथ सौंदर्य के संगम की अनूठी परिकल्पना मुंबई के स्टेशनों पर उभरी अद्भुत कलात्मक अल्पना



प्रिय पाठको,

अपने प्रकाशन के रजत पड़ाव की शानदार उपलब्धि अर्जित कर अपनी सृजनात्मक उत्कृष्टता एवं लोकप्रियता का परचम निरंतर फहराने वाली आप सबकी प्यारी गृह पत्रिका 'रेल दर्पण' का 26 वाँ अंक लेकर हम आपके समक्ष पुनः हाजिर हैं। अप्रैल, 2016 में प्रकाशित 'रेल दर्पण' के रजत जयंती विशेषांक को आप सबने बेहद सराहा। अपनी सराहना से भरी विभिन्न समीक्षाएँ और कई चिट्ठियाँ हमें मिली हैं, जिनमें से कुछ चुनिंदा समीक्षाओं एवं चिट्ठियों का प्रकाशन हमने 'पाठक-पीठिका' स्तम्भ के अंतर्गत किया है। यह स्तम्भ हमारी प्रिय पत्रिका की लोकप्रियता का प्रत्यक्ष पैमाना है। पिछले अंक से शुरू किये गये माय मराठी स्तम्भ को भी विभिन्न समीक्षाओं में काफी सराहा गया है। 'रजत जयंती विशेषांक' को मिले आप सबके प्यार और तारीफे लिए सभी का तहे दिल से शुक्रिया!

पिछले अंकों की तरह ही 'रेल दर्पण' के नवीनतम अंक को भी हमने हर सम्भव श्रेष्ठ बनाये रखने की पूरी कोशिशें की हैं। इसी क्रम में हमने 'हमारा स्टेशन - हमारी शान' अभियान के अंतर्गत विभिन्न स्टेशन परिसरों में की गई शानदार चित्रकारी को नये अंक की प्रमुख संकल्पना के तौर पर चुना है। स्वच्छता के साथ सौंदर्य को जोड़ने की इस अनूठी परिकल्पना के अंतर्गत मुंबई के विभिन्न स्टेशनों पर उकेरी गई विभिन्न पेंटिंग्स को अमने इस बार मध्य पृष्ठों के 'विशेष फोटो फीचर' का हिस्सा बनाया है। साथ ही कुछ दिव्यांग कलाकारों द्वारा मुँह और पैरों के जरिये बनाई गई अनोखी पेंटिंग्स को भी हमने 'विशेष फोटो फीचर' के जरिये आप सभी तक पहुँचाया है। हमेशा की तरह सामयिक गतिविधियाँ स्तम्भ के जरिये पिछले 6 महीनों के दौरान पश्चिम रेलवे पर हुई प्रमुख गतिविधियों का सचित्र लेखा-जोखा पेश किया गया है, वहीं व्यंग्य वीथिका, स्वास्थ्य चर्चा, कथा-कुंज, विविधा, सखियों का संसार, खेल-खिलाड़ी इत्यादि जैसे अन्य नियमित स्तम्भों का सफर भी यथावत जारी रहा है। 'विशेष अतिथि रचनाकार' की महफिल में इस बार हिन्दी काव्य जगत के अत्यंत लोकप्रिय और सिरमौर मंचीय हास्य कवि श्री सुरेन्द्र शर्मा जी ने धमाकेदार शिरकत की है, वहीं अंग्रेजी खंड के 'स्पेशल इंटरव्यू' में इस बार आपकी मुलाकात मशहूर फिल्म निर्देशक एवं अभिनेता श्री सतीश कौशिक से कराई जा रही है। इतिहास के पन्नों में दफन हो चुके कोलाबा रेलवे स्टेशन पर एक स्पेशल फीचर के अलावा रेल पटरियों की दिन-रात निगरानी करने वाले प्रहरियों अर्थात् गैंगमैनों की जिंदगी पर आधारित स्पेशल फीचर अंग्रेजी खंड के प्रमुख आकर्षण हैं।

हमें प्रसन्नता है कि इस दौरान हमारी प्रिय गृह पत्रिका 'रेल दर्पण' ने अपनी मुद्रण गुणवत्ता, बेहतर रंग संयोजन, आकर्षक साज-सज्जा, पठनीय सामग्री और सृजनात्मक उत्कृष्टता की बदौलत न सिर्फ लोकप्रियता की नई-नई बुलंदियाँ हासिल की हैं, बल्कि 40 से अधिक राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर अपनी शानदार कामयाबी का परचम हमेशा लहराये रखा है। इसी सिलसिले को जारी रखते हुए प्रमुख साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संगठन-आशीर्वाद द्वारा प्रति वर्ष दिया जाने वाला सर्वश्रेष्ठ गृह पत्रिका का पुरस्कार वर्ष 2015-16 के लिए एक बार फिर हासिल कर 'रेल दर्पण' ने अपनी सृजनात्मक उत्कृष्टता को पुनः साबित किया है। सफलता के इस शानदार सफ़र का श्रेय 'रेल दर्पण' से जुड़े सभी रचनाकारों, सम्पादकीय और डिज़ाईनिंग टीम के साथ-साथ आप जैसे सभी प्रबुद्ध पाठकों एवं शुभचिंतकों को भी जाता है, जिनकी अनवरत शुभकामनाओं के फलस्वरूप ही 'रेल दर्पण' पत्रिका का कामयाब सफर लगातार जारी है।

'रेल दर्पण' के इस 26 वें अंक को भी हमने पिछले अंकों की तरह आकर्षक साज-सज्जा, रोचक कलेवर और पठनीय स्वरूप देने का हर मुमकिन प्रयास किया है। अंत में एक बार फिर आप सभी को रोशनी के त्योंहार दीपावली एवं नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ देते हुए मैं अपनी बात इस अंक की कलात्मक खासियत को समर्पित इन पंक्तियों के साथ समाप्त करता हूँ..!

**स्वच्छता के साथ सौंदर्य के संगम की अनूठी परिकल्पना  
मुंबई के स्टेशनों पर उभरी अद्भुत कलात्मक अल्पना..!  
'हमारा स्टेशन, हमारी शान' बना एक लोकप्रिय अभियान  
आइये, सब मिलकर स्वच्छता को बनाये अपना स्वाभिमान..!**

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

आपका शुभाकांक्षी,

(रविंद्र भाकर)

प्रधान सम्पादक एवं  
मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी